7

न्यायियों का काल

यहोशू की मृत्यु से शाऊल के अभिषेक तक
1400-1095 ई.पू. (न्यायियों, रूत, 1 शमू. 1-10)

I. धार्मिक स्थिति

इस्राएल की धार्मिक स्थिति इस प्रकार संक्षिप्त की जा सकती है:

1. मूर्तिपूजा में गिरने की कड़ी। –इसके कारण इन बातों में मिलते हैं।

क. उनकी मूर्तिपूजक कुल-परम्परा (*तु.* उत्पत्ति 31:19; 35:2; यहोशू 24:2-14)। – इब्राहीम ने मूर्तिपूजा छोड़ दी थी, परन्तु याकूब के विवाह से यह फिर से पारिवारिक जीवन में अर्थात उसके कुल में प्रवेश कर गई थी; याकूब द्वारा मूर्तियों को गाड़ देने के बावजूद लगता है कि इसका प्रभाव अभी भी था।

ख. उनकी मिसरी दासता (*तु.* निर्ग. 32:21-34; यहोशू 24:14)। इस्राएल मूर्तिपूजा में पहले से ही लगा रहा होगा जो इतनी जल्दी और वह भी सीनै पर्वत के नीचे ही इतना गिर गया; और यहोशू का सम्बोधन भी निर्णायक प्रमाण है कि जंगल में अनुशासन के बावजूद मूर्तिपूजा उनमें पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी।

ग. कनानी कबीलों के साथ मेल-जोल। –कनान उस समय के सबसे खोटे धर्म का केन्द्र था। कार्थेज, यूनान और रोम ने अपने धर्मों के नियम उसी के आधार पर बनाए थे। इसीलिए ईश्वरीय आदेश कनानियों को या तो अपने बीच में से निकालने या नष्ट कर देने का था। इस्राएल की सुरक्षा केवल इसी में थी। अमोरियों की दुष्टता बहुत बढ़ गई थी। आज्ञा को मानने की असफलता, और उसके बाद होने वाले अंतर-विवाह विशुद्ध धर्म के लिए एक खतरा था।

2. बाद में होने वाले उत्पीड़नों की शृंखला। –पड़ोसी कबीलों द्वारा ये उत्पीड़न स्वाभाविक थे। नैतिक तौर पर कमज़ोर लोग राजनैतिक तौर पर भी कमज़ोर हो गए। उनके लिए ये उत्पीड़न परमेश्वर का अनुशासनात्मक न्याय भी थे। मोआबियों, या मिद्यानियों, या फिलिस्तीनियों द्वारा बार-बार मार खाकर पश्चाताप करने वाला इस्राएल अपने सताने वालों की मूर्तिपूजा से यहोवा की आराधना की ओर मुड़ता था। अंत में विशुद्ध विश्वास की विजय हुई।

3. छुड़ाने वालों की एक शृंखला जिन्हें न्यायी कहा जाता है। –ये आदर्श लोग नहीं थे। वे मसीही विश्वास के नायकों की तरह आदर्श नहीं हैं। अज्सर, अंधविश्वासी और क्रोधपूर्ण तथा नैतिक तौर पर कमज़ोर होने के बावजूद इन लोगों का विश्वास परमेश्वर में था। ऐसे समयों में इतना ही काफी था। वे पौलुस या लूथर की तरह *अपनी* उम्र में बड़े थे,

और इस कारण विश्वास के नायकों की भूमिका में उनका नाम आना चाहिए। इसके अलावा, वे देशभक्त भी थे। उस युग में जब कबीले एक दूसरे के विरुद्ध लड़ते-झगड़ते और स्थानीय तौर पर एक दूसरे से ईर्ष्या करते थे उस समय इन लोगों ने उससे ऊपर उठकर राष्ट्रभक्ति दिखाई। वे अपने समय के टैल[1], वॉलेस[2] और वाशिंगटन[3] थे।

II. राजनैतिक स्थिति

राजनैतिक तौर पर कोई राष्ट्रीय संगठन, राष्ट्रीय राजधानी या राष्ट्रीय प्रमुख नहीं था। मूसा ने एक धार्मिक प्रबन्ध दिया तो था परन्तु राजनैतिक शासन प्रणाली स्पष्ट रूप से नहीं बताई गई। वे बारह कबीले थे, जो कई बार साझी सुरक्षा के लिए इकट्ठे हो जाते थे, कई बार ऐसी बातों पर झगड़ते थे जिनसे अपना ही नाश होता था। उनकी स्थिति की तुलना एगबर्ट के अधीन संघ के एंग्लो-सेक्सन सप्तशासन से की जाती है। परन्तु उन्हें तीन बातों ने एक दर्जन राष्ट्र बनने से रोके रखा।

क. साझी कुल परम्परा और इतिहास। -इस्राएल जाति का संस्थापक इब्राहीम था; इसहाक और याकूब के प्रति उनके मन में पूरी श्रद्धा थी; जबकि यूसुफ, मूसा, यहोशू और लाल सागर की महिमा, यरदन और विजय एक कौमी विरासत थी।

ख. साझी भाषा, इब्रानी। -अलग-अलग उप भाषाओं के संकेत मिलते हैं परन्तु यह अंतर अल्फ्रेड के समय में इंग्लैण्ड में पाए जाने वाले अंतरों जितने नहीं होंगे।

ग. साझा धर्म। -मन्दिर शीलो में स्थापित किया गया था। सबके लिए केवल एक ही वेदी थी। वहां कौम का महायाजक रहता था। पूरी कौम के लिए बलिदान हर रोज चढ़ाए जाते थे। सभी कबीलों के प्रतिनिधि तीन बड़े वार्षिक पर्वों पर वहीं जाते थे। एक ही केन्द्र की ओर ध्यान दिलाने वाली बातें ऐसी थीं। यूनानियों में ऐसे ही बंधन थे परन्तु भौगोलिक स्थिति पहले इस प्रकार व्यक्तिवादी हो गई कि उन्होंने एक कौम बनाने के लिए कभी एक्का नहीं किया। इन बंधनों ने इब्रानी लोगों को शमूएल नबी में और दाऊद राजा में उन्हें एक राष्ट्र के रूप में जोड़े रखने के लिए राजनैतिक संगठन के रूप में और विश्वास आने तक जोड़े रखा।

III. छह सैद्धांतिक आक्रमण

इस जंगली परन्तु कौमी जीवन के रचनात्मक काल में, बाहर से छह सैद्धांतिक आक्रमण हुए। जैसा हमने पहले देखा है कि ये आक्रमण स्वाभाविक थे और इस्राएल जाति के विश्वास से भटकने के कारण परमेश्वर का न्याय था।

''इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया''; ''इस्राएलियों ने यहोवा की दुहाई दी''- न्यायियों की पुस्तक में इस प्रकार के वैकल्पिक वाक्य, दस बार दोहराए गए हैं,[4] जिनमें उनके इतिहास का नैतिक महत्व लिपटा है। यह अभियानों के इतिहास में एक अध्याय की तरह या नारमनों की विजय[5] की तरह पूरी तरह से मानवीय है; परन्तु इसका विशेष महत्व अनुशासन में है जिसके द्वारा इस्राएल वह जाति बना जिसका परमेश्वर यहोवा है।

1. पूर्व से मेसोपोटामिया का आक्रमण। -इब्राहीम के समय हमने देखा कि फरात

के राजा अपने राज्य का विस्तार यरदन तक करके लूत को जीत लेते हैं। पांच सौ वर्ष बीत चुके हैं। उस बड़ी घाटी में एक और पश्चिमी आक्रमण होता है। आठ वर्ष तक इस्राएल जुए के नीचे कराहता है जब कालेब का भतीजा ओत्नीएल उन्हें विद्रोह के लिए उकसाकर आक्रमणकारियों को फरात की ओर भगा देता है।

2. दक्षिण पूर्व से मोआबी आक्रमण। -लूत के वंशज अर्थात मोआबी लोग मृत सागर के पूर्व में बसते थे। एग्लोन के शासन में उन्होंने दक्षिण पूर्वी कबीलों को जीतकर यरदन नदी भी पार कर ली और अठारह वर्ष तक यरीहो पर कब्ज़ा किए रखा। बिन्यामीनी गोत्र का एहूद नामक व्यक्ति बिन्यामीनी कबीलों की ओर से भेंट देने के लिए एग्लोन के पास गया। उसने राजा को एकांत में बुलाकर मार दिया और पश्चिमी पहाड़ों में भाग गया। वहां उसने एक सेना तैयार की, और यरदन के घाटों पर कब्ज़ा करके एक घमासान युद्ध में दस हज़ार मोआबियों को मार गिराया। इससे कम से कम अस्सी वर्ष तक उस क्षेत्र में शांति रही।

3. उज़र से कनानियों का आक्रमण। -यहोशू ने मेरोम नामक नदी के पास याबीन की अगुआई वाले उज़री राजाओं के संघ को पराजित किया था। बाद वाले एक याबीन के शासन में इन उज़री कनानियों ने एकजुट होकर बीस वर्ष तक उज़री कबीलों को सताया था। अंत में दबोरा नामक एक बहुत ही विश्वासी और साहसी महिला भविष्यवक्ता ने बाराक को उकसाया। दस हज़ार पुरुषों की एक सेना तैयार करके उसने एस्ड्राएलोन[6] में एक बड़ी विजय प्राप्त की। कनानी सेनापति सीसरा पैदल भागकर मूसा के ससुर यित्रो के वंशज हेबेर केनी की स्त्री याएल के डेरे में चला गया। याएल अपने समय की चारलोटे कोर्डे[7] साबित हुई और उसने सो रहे सीसरा की कनपटी में डेरे की एक खूंटी लेकर हथौड़े से इतनी ज़ोर से गाड़ी कि वह ज़मीन में धंस गई। दबोरा ने विजय का जश्न युद्ध का एक अर्थपूर्ण गीत गाकर मनाया (न्यायियों 5)।

4. पूर्व से मिद्यानियों का आक्रमण। -मिद्यानी लोग इब्राहीम की पत्नी कतूरा से उत्पन्न अरबी लोग थे। वे देश में तो नहीं रहते थे परन्तु कटनी के समय उनकी संख्या बहुत होती थी और लूट का माल लेकर वे चले जाते थे। उनके आक्रमण इतने भयंकर होते थे कि इस्राएल के लोग पहाड़ों, चारदीवारी वाले नगरों और यहां तक कि गुफ़ाओं में छुप जाते थे। परमेश्वर ने मनश्शै के गोत्र में से गिदोन नामक एक छुड़ाने वाले को खड़ा किया। उसने शुरुआत अपने पिता के घर और गांव में बाल देवता की पूजा बंद करवाकर की। फिर उसने 32 हज़ार लोगों की सेना इकट्ठी की, लेकिन कमज़ोर दिल वालों को चले जाने के लिए कहकर उस सेना को दस हज़ार तक कर दिया। मुंह में हाथ लगा चपड़-चपड़ करके पानी पीने वाले तीन सौ लोगों को चुनकर उसने यह संख्या और कम कर दी। इस छोटी सी टुकड़ी के साथ उसने रात को आक्रमण किया और बड़ी संख्या में मिद्यानियों को मार गिराया तथा उन्हें पूर्वी जंगल तक खदेड़ दिया। बाराक और गिदोन दोनों की विजय, उज़री कबीलों द्वारा हासिल की गई थी। एप्रैम के शक्तिशाली केन्द्रीय गोत्र को कम योगदान देने के लिए इन विजयों में चिढ़ाया गया; और गिदोन ने चालाकी और चापलूसी से उनकी ईर्ष्या को कम

किया (न्यायियों 8:1-3)। गिदोन उनका हीरो बन गया। उसे राजा बनाने की पेशकश की गई परन्तु उसने इन्कार कर दिया। उसके अधिक महत्वाकांक्षी परन्तु कम योग्य पुत्र, अबीमेलेक ने अपने एक भाई को छोड़कर सबका कत्ल कर दिया और कुछ समय तक शकेम का राजा बन गया। एक विद्रोह को दबाने के लिए उसे अपना मुकुट और प्राण दोनों खोने पड़े।

5. पूर्व से अज़्मोनियों का आक्रमण। -मोआबियों की तरह अज़्मोनी भी लूत के वंशज थे। यरदन के पूर्वी देश में विजय प्राप्त करके उन्होंने पूर्वी जंगल में चढ़ाई कर दी। शीघ्र ही वे पूर्वी कबीलों पर दबाव डालने लगे। यिप्ता के माध्यम से उन्हें छुटकारा मिला। वह वेश्या का बेटा था जिस कारण उसे घर से निकाल दिया गया था, परन्तु बाद में उसे वापस बुलाया गया, उसका अधिकार दिया गया और अज़्मोनियों को निकालने के लिए बनाई गई सेना का मुखिया बना दिया गया। युद्ध में जाने से पहले, उसने मन्नत मांगी कि यदि वह विजयी होता है, तो घर लौटने पर जो भी पहले उसे मिलेगा वह उसे यहोवा के सामने अर्पण करेगा। उसने युद्ध जीत लिया और घर जाने पर उसे अपनी इकलौती बेटी ही मिली और उसने उस पर अपनी मन्नत पूरी की।

6. दक्षिण पश्चिम से फिलिस्तीनियों का आक्रमण। -पलिश्ती लोग भूमध्य क्षेत्र के लड़ाके व्यापारी थे। वे फीनीके के प्रतिद्वंद्वी थे और एक समय उन्होंने सीदोन पर कज़्जा किया था, जो उसके बाद सूर के आगे फीनीके में कहीं डूब गया था। पलिश्ती लोग इस्राएल के कट्टर शत्रु थे, जो न्यायियों के पूरे काल में और राजतन्त्र के समय दाऊद द्वारा बंद करने तक उन्हें तंग करते रहे। शिमोन, दान और यहूदा के दक्षिणी गोत्रों पर विशेष तौर पर स्पष्ट आक्रमण होते थे। अंतिम और कुछ बातों में इन सैनिक नायकों में सबसे अलग दान के गोत्र का शिमशोन था। वह जन्म से एक नाज़ीर था, अर्थात उसकी मां द्वारा प्रण लिया गया था कि वह किसी अशुद्ध वस्तु को न खाएगा, दाखमधु या किसी और तरह की मदिरा न पीएगा और अपना सिर कभी नहीं मुंडवाएगा। वह इब्रानी हरज़्यूल्स था जिसे अति मानवीय सामर्थ के कामों में आनन्द आता था, जो अज़्सर विलक्षण काम करता था परन्तु राष्ट्रभज़्त था। दक्षिण पश्चिमी पहाड़ियों में अपने घर से, उसने अकेले ही पलिश्ती पर कई चढ़ाइयां की थीं। पलिश्ती स्त्रियों के साथ दो विवाह करना उसकी सफलताओं और अंतिम पतन का कारण बना; ज़्योंकि शिमशोन एक बहुत बड़ा कमज़ोर व्यज़्ति बन गया था। दलीला की बातों में आकर वह अपनी सामर्थ का रहस्य उस पर प्रकट कर देता है और अपनी नाज़ीरी मन्नत को तोड़कर अपने बाल काटने की अनुमति दे देता है। यह बहुत ही अपमानजनक दृश्य था कि जिस शिमशोन से पूरा पलिश्ती थर-थर कांपता था, उसने अपना सिर दलीला की गोद में रख दिया। परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने के बाद वह दलीला के पास से चला गया और अपने शत्रुओं का शिकार बना। उसे अंधा किया गया, बंदी बनाया गया, चज़्की पीसने के लिए मजबूर किया गया, लेकिन उसे अपनी मन्नत फिर से दोहराने और अपनी सामर्थ फिर से पाने का अवसर मिलता है। पलिश्तियों द्वारा अपने देवता दागोन के एक पर्व में लोगों के मनोरंजन के लिए लाया गया शिमशोन, स्विट्जरलैण्ड के नायक विंकलरीड की तरह, अपने

देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन दे देता है। मन्दिर के मुज्य स्तज़्भों को नीचे खींचकर वह अपने हज़ारों शत्रुओं के साथ स्वयं भी ज़िन्दा दफ़न हो जाता है। पलिश्ती शज़्ति कम नहीं हुई, परन्तु इस्राएल में साहस जगाने के लिए और शमूएल और दाऊद के काम को और पज़्का करने के लिए उसके वीरतापूर्ण कार्यों का बहुत महत्व था।

IV. रूत की कहानी

न्यायियों के काल में ही कहीं रूत की पुस्तक में लिखी गई बातें घटित हुईं। यह उस समय की एक शांतिपूर्ण कहानी है। इस पुस्तक को पूरा पढ़ा जाना चाहिए। एलीमेलेक और नाओमी बैतलहम में रहते थे। शायद, अकाल या किसी आक्रमण के कारण, उन्हें मोआब देश में जाना पड़ा। वहां उनके लड़कों की शादी हो गई। दस वर्षों बाद, तीन स्त्रियां संतान रहित विधवा बन जाती हैं। नाओमी अपने घर की ओर रुख करती है। दोनों जवान स्त्रियां उसके साथ जाती हैं। इस अहसास के साथ कि एक पराई जाति में इन लड़कियों का जीवन कितना अकेला होगा, नाओमी उन्हें अपने साथ जाने से रोकती है। ओर्पा हट जाती है और फिर वापस आ जाती है। रूत ऐसी भाषा में जवाब देती है जो उच्च कोटी की भाषा बन गई (रूत 1:16, 17)। ऐसा विश्वास और समर्पण बिना फल के नहीं रहा। बैतलहम में पहुंचकर रूत अपने पति के एक कुटुज़्बी (रिश्तेदार) बोअज़ के खेतों में अनाज बीनती है। नाओमी की आज्ञा से वह अपने पति के नाम और विरासत को चलाने के लिए रिश्तेदार से स्त्री के विवाह के अधिकार का दावा करती है; और इस प्रकार वह दाऊद, और मरियम और **यीशु** की सज़्मानित पूर्वज बन गई।

V. शमूएल, भविष्यवज़्ता व न्यायी (1 शमू. 1-10)

मूसा और दाऊद के बीच में शमूएल सबसे महत्वपूर्ण व्यज़्ति है। वह अपने समय का लूथर भी था और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी। जन्म से मृत्यु तक का उसका पूरा चरित्र, हमें उस काल के निचले स्तरों से ऊपर उठाता है। संतानहीन हन्ना ने संतान के लिए तड़प रही एक इब्रानी मां की तड़प से उसे परमेश्वर से मांगा और परमेश्वर को ही लौटा दिया। इस प्रकार उसका पालन पोषण शीलो में मन्दिर में ही हुआ।

महायाजक एली इस समय ''न्यायी'' था। एक साथ दो पद पाने वाला वही पहला व्यज़्ति था। बूढ़े हो चुके एली ने जिसका अपना जीवन तो ठीक था परन्तु उसने अपने लड़कों को काबू में न रखने का पाप किया। बालक शमूएल के द्वारा परमेश्वर ने एली के घर का अंत प्रकट किया। अपेक का प्रसिद्ध युद्ध हुआ, जिसमें पलिश्तियों ने एली के पुत्रों को कत्ल करके वाचा के संदूक को अपने कज़्जे में ले लिया। खबर सुनकर एली भी मर गया। इसके बाद अंधेरे के वर्षों से इस आशा के बढ़ने से राहत मिली कि शमूएल को परमेश्वर का नबी होने के लिए बुलाया गया है। शमूएल के काम को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है:

(1) उसने वाचा को फिर से दोहराने और यहोवा की आराधना शुरू करने के लिए

लोगों को वापस लाकर एक बहुत बड़ा कौमी सुधार किया।

(2) एबेनेज़ेर में पलिश्तियों के आक्रमण पर उसने ऐसी विजय पाई कि उन्होंने दोबारा उसके न्यायी होने की बात पर सवाल नहीं उठाया।

(3) उसने नबियों के लिए पाठशाला बनवाई।

(4) वह जीवन भर इस्राएल का ''न्यायी'' रहा।

(5) उसने शाऊल का अभिषेक करके और उसके ठुकराए जाने के बाद, दाऊद का अभिषेक करके राजतन्त्र के लिए मार्ग तैयार किया और इसकी शुरुआत की। इस प्रकार शमूएल का सज़्बन्ध न्यायियों से राजतन्त्र काल में प्रवेश करने से है। वह न्यायियों में सबसे अंतिम और महान और मूसा के बाद इब्रानी नबियों में सबसे पहला है।

पाद टिप्पणियां

[1]स्विट्ज़रलैंड का एक देशभज़्त जिसे ऑस्ट्रियाई राज्यपाल ने उसके बेटे के सिर पर सेब रखकर तीर कमान से उसका निशाना लगाने को विवश किया था। [2]स्कॉटलैंड का सैनिक अगुआ तथा देशभज़्त। [3]पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति, सुधारक, शिक्षक तथा वज़्ता। [4]नारमनों द्वारा 1066 में विलियम के अधीन इंग्लैण्ड की विजय। [5]कज़्मेल पर्वत के निकट भूमध्य से यरदन नदी तक फैला, उज़री इस्राएल का एक मैदान जो प्राचीन काल में युद्धस्थल के नाम से प्रसिद्ध था।[6]न्यायियों 3:7, 9; 3:12, 15; 4:1, 3; 6:1; 7; 10:6, 10. [7]चारलोटे कोर्डे (1768–1793 ई.) फ्रांसीसी क्रांतिकारी जीन पॉल मारट का हत्यारा था।